



# माही बीहड़ों के पुर्नस्थापन हेतु मृदा एवं जल संरक्षण प्रौद्योगिकियाँ

गोपाल लाल बागड़ी • रविशंकर कुरोटे • हरिबंश सिंह



केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान,  
अनुसंधान केन्द्र, वासद-388306, जिला - आनन्द (गुजरात)



## विषय सूची

अध्याय	पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन	i
प्रस्तावना	ii
आभार	iii
1. परिचय	1
2. मृदा एवं जल संरक्षण प्रौद्योगिकियों का वर्गीकरण	2-3
3. सस्यात्मक प्रौद्योगिकियाँ	4-15
4. अभियांत्रिक प्रौद्योगिकियाँ	16-32
5. वानिकी प्रौद्योगिकियाँ	33-37
6. सन्दर्भ	38



## प्राक्कथन

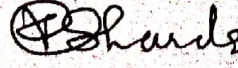


किसानों द्वारा मृदा एवं जल संरक्षण तकनीकों को अपनाना, इस बात पर निर्भर करता है कि उन्हें इन तरीकों के बारे में कितना ज्ञान और समझ है। कई किसान, मृदा एवं जल संरक्षण के उपायों को शीघ्र अपना लेते हैं परन्तु कुछ इससे संबंधित तकनीकी ज्ञान की कमी, उसमें प्राथमिक रूप से आने वाली अधिक लागत एवं तकनीक के वास्तविक जरूरत के उपयुक्त न होने के कारण इसे अपनाने में शिथिल रहते हैं।

ऐसा महसूस किया गया है कि पर्याप्त रूप में अपेक्षा के अनुरूप विकसित की गई मृदा एवं जल संरक्षण तकनीकियाँ न तो किसानों तक पहुँचाई जा रही हैं और नहीं किसान उसे अपना रहे हैं। अभी भी किसान मृदा एवं जल संरक्षण तकनीकियों के परंपरागत उपायों से ही जुड़े हैं। नवीनतम तकनीकियों को किसानों द्वारा न अपनाए जाने के कई कारण हैं जिसमें मृदा एवं जल संरक्षण की नवीनतम तकनीकियों के बारे में अभी पूरी जानकारी न होना प्रमुख हैं।

अतः इस दिशा में यह अत्यंत आवश्यक है कि मृदा एवं जल संरक्षण की नवीनतम तकनीकियों की संपूर्ण जानकारी को आसानी से समझ में आ सकने वाले सरल रूप में किसानों तक पहुँचाया जाए। यह बुलेटिन बीहड़ सुधार हेतु किसानों को मृदा एवं जल संरक्षण तकनीकियाँ को समझने की क्षमता व ज्ञान को बढ़ाने में मदद करेगी।

यह बुलेटिन बीहड़ सुधार एवं जल ग्रहणक्षेत्र विकास में मृदा एवं जल संरक्षण तरीकों के प्रचार हेतु प्रसार वैज्ञानिकों के लिए भी बहुत उपयोगी होगी।

 23/12/05

(विश्वनाथ शारदा)

निर्देशक

केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण  
अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान,